डोनाल्ड ट्रम्प की भारत यात्रा: सम्पूर्ण विश्लेषण

लेखक-सी. राजा मोहन (निदेशक, दक्षिण एशियाई अध्ययन संस्थान, सिंगापुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

28 फरवरी, 2020

"भारत खुद के साथ एक युद्ध में उलझा हुआ है जिसके कारण वह हिन्दी-अमेरिकी भाई-भाई चरण द्वारा प्रस्तुत संभावनाओं का लाभ नहीं उठा सकता है।"

इस सप्ताह भारत ने जिस तरह से अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प का स्वागत किया है, उस तरह से 1950 के दशक के बाद से किसी विदेशी नेता का स्वागत नहीं किया था। हैरानी कि बात तो यह है कि ये सब इस तथ्य को जानने के बावजूद हुआ है कि भारत का संबंध अन्य किसी भी बड़े शक्तिशाली देशों के साथ उतना विवादस्पद नहीं रहा है जितना संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ रहा है।

जहाँ अब नेताओं के साथ सार्वजनिक रैलियाँ दुर्लभ हो गयी हैं, वहीं 1950 के दशक के दौरान ऐसी रैलियों का आयोजन करना एक आदर्श था, जहाँ बड़ी संख्या में भीड़ प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के साथ चीनी नेताओं झोउ एनलाई, रूसी नेता निकिता चलन और अमेरिकी राष्ट्रपति ड्वाइट आइजनहावर जैसे विश्व नेताओं का स्वागत करने के लिए शामिल हुई थी।

1950 के दशक में हुआ स्वागत नए भारत की अंतरराष्ट्रीय संभावनाओं को तलाशने के बारे में था। मोटेरा और दिल्ली में ट्रम्प का भव्य स्वागत अमेरिका के बारे में भारत की सोच में एक निश्चित बदलाव की ओर इशारा करता है। पिछले दो दशकों में प्रगति के बावजूद अमेरिका का अविश्वास नौकरशाही, राजनीतिक वर्ग और बुद्धिजीवियों में उलझा हुआ था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाल के पूर्ववर्ती जिसमें पी. वी. नरसिम्हा राव, अटल बिहारी वाजपेयी और मनमोहन सिंह शामिल हैं, सभी अमेरिका के साथ संबंध बदलने के लिए उत्सुक थे, लेकिन अमेरिका के साथ सहयोग के सबसे सरल रूपों के खिलाफ गहरे आंतरिक प्रतिरोध में पीछे हो गए।

विशेष रूप से अमेरिका के साथ सुरक्षा साझेदारी विदेश नीति के कसौटी से विचलित थी। इसके अलावा रूस या चीन केवल इसी बात से संतुष्ट हो सकते थे कि भारत अमेरिका के करीब ना जाये। परिणामस्वरुप रूस और चीन के साथ सहयोग 'प्रगतिशील' है और अमेरिका के साथ साझेदारी 'प्रतिगामी' हुई। हालाँकि प्रधानमंत्री मोदी ने दशकों से चली आ रही इस प्रथा को तोड़ा।

2016 की गर्मियों में अमेरिकी कांग्रेस को संबोधित करते हुए मोदी ने दावा किया था कि अमेरिका के साथ भारत की 'ऐतिहासिक झिझक' खत्म हो गई है और मोटेरा में मोदी ने इसी बात को सच साबित किया।

मोदी का यह कहना कि भारत के लिए अमेरिका से संबंध काफी मायने रखता है, इस तथ्य पर आधारित था कि दिल्ली और वाशिंगटन के बीच विश्वास का एक नया स्तर शुरू हो चुका है। यह अमेरिका के साथ साझेदारी के बारे में भारत के पिछले अवरोधों को दूर करने से भी संबंधित था। यह एक नया विश्वास ही है जिसने मोदी को अमेरिका के साथ नई संभावनाओं को सार्वजनिक रूप से प्रसारित करने की अनुमति दी है।

संशयवादियों का तर्क है कि भारत अपनी अंतर्राष्ट्रीय मित्रता के बारे में काफी भावुक है। वे 1950 के दशक में 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' के नारे के साथ चीन के साथ भारत दोस्ती की तीव्रता को याद करते हैं। हालाँकि, तिब्बत के क्षेत्र और अन्य मुद्दों पर दोनों देशों के बीच संरचनात्मक विरोधाभासों ने एक दशक से भी कम समय में दोस्ती की इस भावना को खतम कर दिया।

हालाँकि किसी ने इसे 'हिंदी-रूसी, भाई-भाई' के रूप में टैग नहीं किया, लेकिन रूसी साझेदारी भारत की दशकों से विदेश नीति के लिए काफी महत्त्वपूर्ण रही।

इस सप्ताह ट्रम्प की यात्रा हमें सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव निकिता खुश्चेव और प्रधानमंत्री निकोलाई बुल्गानिन द्वारा 1955 में भारत के माध्यम से विस्तारित यात्राओं की याद दिलाती है। दोनों रूसी नेताओं ने तमिलनाडु के ऊटी से श्रीनगर तक पूरे देश की यात्रा की।

जैसा कि 1950 के दशक के मध्य में सोवियत रूस ने अंतर्राष्ट्रीय अलगाव से अलग होने की कोशिश की थी, वहाँ के नेताओं को भारत में मिले स्नेह से काफी खुशी हुई। ट्रम्प भी मोटेरा में लोगों की भारी उपस्थिति से काफी प्रभावित हुए। ट्रम्प का दौरा निकिता खुश्चेव के कश्मीर दौरे में दिए गये संकेत के समान है। श्रीनगर में अपनी सार्वजनिक बैठक में रूसी नेताओं ने कश्मीर पर भारत के रुख के लिए अपने मजबूत समर्थन की घोषणा उस समय की जब एंग्लो-अमेरिकी शक्तियाँ UNSC में भारत पर दबाव बनाने की कोशिश कर रही थीं।

मध्यस्थता पर ट्रम्प की बातचीत में भारतीय प्रवचन को कश्मीर के प्रश्न पर ट्रम्प के व्हाइट हाउस से और सीमा पार आतंकवाद को रोकने के लिए पाकिस्तान पर दबाव डालने के लिए दिल्ली से जो असाधारण समर्थन मिला है, वह महत्त्वपूर्ण है।

पिछले अगस्त में भारत की राज्य की संवैधानिक स्थिति को बदलने के बाद यूएनएससी में कश्मीर के मुद्दे को ले जाने के लिए पाकिस्तानी प्रयास को रोकने में अमेरिका का समर्थन सबसे महत्त्वपूर्ण था। फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (FATF) में पाकिस्तान पर दबाव बनाए रखने में भी अमेरिका का रुख ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण था। गौरतलब है कि अगस्त के बाद से अमेरिका ने कश्मीर में संवैधानिक परिवर्तन पर सवाल नहीं उठाया है।

भारत के लिए अमेरिका का यह समर्थन कश्मीर पर पाकिस्तान के लिए चीन का समर्थन और आतंकवाद पर अंतर्राष्ट्रीय कार्रवाई के खिलाफ संरक्षण के समय आया है, जो भारत-अमेरिका संरेखण की अनकही कहानी का एक अलग हिस्सा है। कश्मीर पर समर्थन ने 1950 के दशक में सोवियत रूस को भारत के करीब लाया और 1960 के दशक में मास्को और बीजिंग के बीच दरार ने भारत-सोवियत साझेदारी को मजबूत किया। आज वाशिंगटन और बीजिंग के बीच गहराते हुए मतभेद और भारत तथा चीन के बीच बढ़ते असंतुलन ने दिल्ली और वाशिंगटन के बीच मंच स्थापित किया है ताकि वे एशियाई शक्ति संतुलन को स्थिर कर सकें।

अमेरिका के कई पारंपरिक सहयोगियों के नेताओं के विपरीत, जिन्होंने ट्रम्प को एक अमेरिकी राजनीतिक विपत्ति के रूप में माना, मोदी ने अमेरिकी राष्ट्रपति के 'अमेरिका फर्स्ट' दृष्टिकोण में महत्त्वपूर्ण संभावनाएँ देखीं, जिसने उपमहाद्वीप, भारत-प्रशांत और सुरक्षा तथा रक्षा सहयोग के क्षेत्र में भारत के लिए नए आयामों का निर्माण किया।

अमेरिका के कई दोस्तों के विपरीत, मोदी सरकार पिछले साल सितंबर में ह्यूस्टन में 'हाउडी मोदी' रैली में ट्रम्प के पुनर्विचार को प्रदर्शित करने के लिए कुछ राजनीतिक जोखिम उठाने के लिए तैयार थी। इसने निश्चित रूप से अमेरिका में विपक्षी डेमोक्रेट्स को नाराज किया, लेकिन गहरी साझेदारी का असली खतरा वाशिंगटन से नहीं, बल्कि दिल्ली से उत्पन्न होता है। ऐसा इसलिए क्योंकि भारत खुद के साथ एक युद्ध में उलझा हुआ है जिसके कारण वह 'हिंदी-अमेरिकी, भाई-भाई' चरण द्वारा प्रस्तुत संभावनाओं का लाभ नहीं उठा सकता है।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

प्र. हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का भारत दौरा चर्चा में बना रहा। इसके संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के आगमन पर मोटेरा में भव्य समारोह आयोजित किया गया।
2. ट्रंप ने कोरोना वायरस और नागरिकता सशोंधन अधिनियम (CAA) को वैश्विक मुद्दा बताया है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2

Expected Questions (Prelims Exams)

Q. Recently, US President Donald Trump's visit to India has been in news. Consider the following statements in this context.

1. On the arrival of US President Trump, a grand ceremony was held in Motera.
2. Trump said corona virus and Citizenship. Amendment Act (CAA) are global issue.

Which of the above statements is/are correct?

(a) Only 1 (b) Only 2

(c) Both 1 and 2 (d) Neither 1 nor 2

नोट : 27 फरवरी को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1 (d) होगा।

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्र. 'भारत के महाशक्तियों के साथ सम्बन्धों के मद्देनजर सम्बंधित राष्ट्राध्यक्षों के भारत दौरे हमेशा से ही महत्त्वपूर्ण रहे हैं। इसी क्रम में डोनाल्ड ट्रंप का हालिया दौरा दोनों देशों के लिए युगप्रवर्तक दिखाई पड़ता है।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? (250 शब्द)

"The visit of the respective heads of state to India has always been important in the context of India relations with the superpowers. In this sequence, Donald Trump's recent visit looks epoch-making for both countries." Do you agree with this statement? (250 words)

नोट :- अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रख कर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।